९८. अखण्डता, सार्वभौमता ही मानव परम्परा है

१७-०९-१३

मानव परपरा का मतलब, विकसित मानव परम्परा है | अखण्डता मानव परम्परा में ही होना पाया गया है | मानव परम्परा में अखण्डता सर्वमानव के संदर्भ में होता है | सर्वमानव समझदारी के आधार पर एक सूत्र में जी पाते हैं | यही मानव संस्कृति, सभ्यता का मतलब है | ये दोनों भाग संस्कृति, सभ्यता की अखण्डता का आधार है | अखण्ड समाज ही मानव परम्परा है अन्यथा समुदाय परम्परा है | समुदाय परम्परा में अपराध भावी है | मानव परम्परा में मुक्ति है | अपराध-मुक्ति ही उत्सव के रूप में प्रदर्शित होता है | अपराधिक विधि से किसी का नुकसान हमारा उत्सव का आधार है | इस ढंग से उत्सव का स्वरूप ही बदल जाता है | मानव ज्ञानावस्था में होने के कारण, ज्ञान विधि से अखण्डता, सार्वभौमता भावी है | अखण्डता व्यवहार-कार्यों और संस्कृति, सभ्यता के रूप में ही होना देखा गया है | संस्कृति, सभ्यता उत्सवों के रूप में, समृद्धि के रूप में होना देखा गया है; सांस्कृतिक उत्सवों के रूप में देखा गया है | संस्कृति परम्परा के अर्थ में होता है | समृद्धि परिवार के रूप में होता है | समृद्ध होना एक परिवार में प्रदर्शित होता है | ऐसी समृद्धि दूसरे के उपकार के लिये होता है |

दूसरे के साथ उपकार ही मानव संस्कृति का मतलब है | मानव संस्कृति विकसित चेतना है न कि यांत्रिकता | यांत्रिकता से मानव का ह्रास होना आवश्यक है | जैसा दूरदर्शन, दूरगमन, दूरभाष मानव शक्ति का ही कमी का आधार है | ज्ञान विधि से इसका निराकरण हो जाता है | दूरदर्शन, दूरगमन, दूरभाष मानव का असमर्थता का द्योतक है | यांत्रिकता का महिमा व्यापार विधि से पनपा है | लाभ प्रवृत्ति के बिना व्यापार होता नहीं | हर समुदाय चेतना लाभोन्मादी हो गये हैं | इसी क्रम से ईर्ष्या द्वेष पनपा है | सामरिक तंत्र इससे प्रबल हुआ है; जिसको विकास माना जाता है | जबकि ह्रास की ओर जा रहा है | ह्रास और विकास का आंकलन मानव में विकसित चेतना के आधार पर आंकलित होता है | विकसित चेतना विधि से ही विकास, विकास के आधार पर विकसित चेतना का आंकलन ही मानवीयता का आधार है | मानवीयता ही मानव का जीने का वैभव है | जीवों के सदृश जीना मानवीयता नहीं होता; जिसमें व्यापार प्रधान होना स्वाभाविक है | व्यापार लाभोन्मादी होना देखा गया है | लाभ के बिना व्यापार होता नहीं | लाभ का अंतिम बिंदु मिलता नहीं | इस आधार पर लाभ को उन्माद बताया है | उन्माद का मतलब पागलपन है | पागलपन का मतलब है असामाजिकता |

असामाजिकता का मतलब है अपराध परम्परा | अपराध परम्परा मानव का ह्रास माना जाता है | मानवीयता ही विकास माना जाता है | विकास विधि से ही अर्थात चेतना विकास विधि से ही न्याय-सुरक्षा, समाधान दोनों भावी होता है | इसी से तीनों प्रमाण प्रमाणित होता है | तीनों प्रमाण मिलने से पहला विकास सम्मत होता है | विकास सम्मत होना अनुभव सम्मत होता है | अनुभव सम्मत होना सह-अस्तित्व सम्मत होता है | इस क्रम में मानव अपने को जांच सकता है | हर मानव जाँच सकता है | मानव विकसित हु, नहीं विकसित हुआ यही जाँच का मुद्दा है | पैसा क्या है? अब इस बात पर आते हैं | पैसा मूलतः हमने धातु मुद्रा के रूप में देखा है | चांदी का रुपया, तांबे का पैसा होना देखा गया है | इस क्रम में धातु खाने योग्य नहीं रहा | इसका मतलब इस विधि में भी धातुएं खाने योग्य नहीं रहा | खाने योग्य वस्तुएं धरती ही देता रहा | धरती के प्रति निरादर, श्रम के प्रति निरादर, उत्पादन के प्रति निरादर ही इसका परिणाम हुआ | मानव अपने आप में सुविधा भोग के आधार पर अपराधों को वैध माना | लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद अपराधों का आधार है | अपराध का अंतिम स्वरूप युद्ध है |

युद्ध में ये देखा गया है, दोनों पक्ष में आदमी होता है | आदमी होते हुए मानवीयता के अभाव में ये परस्परता में शत्रुता मानते हैं | यही युद्ध का आधार है | भ्रमवश ही मानव पागल होता है | पागल होने का फल ही युद्ध है | अभी युद्ध सर्वोपरि माना जाता है | सर्वाधिक पैसा उसी को दिया जाता है | पागलपन में शक्तियों का अपव्यय होना स्वाभाविक है | अपव्ययता ही मानव का दरिद्रता का लक्षण है | जितना ज्यादा से ज्यादा झगड़ा, झांसा, अपराध प्रवृति को वैध मान लेना, ये सब भ्रमवश ही होता है | अपराध को वैध मानना स्वयं में पागलपन है | इसीलिये इसको उन्माद कहा है | इस क्रम में मानव, अपराधिक कार्यक्रम में पार पाना सम्भव नहीं है | आज सामरिक शक्तियों से सम्पन्न देश, कल विपन्न हो जाता है | इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह हुआ, इंग्लैण्ड कुछ वर्ष पहले या एक शताब्दी पहले इस धरती के सर्वाधिक भाग में राज्य करता था | वही एक दिन पराभवित हो गया | इंग्लैण्ड का कोई प्रभाव विश्व पर नहीं पड़ रहा है | आज का स्थिति में अमेरिका का प्रभाव ज्यादा पड़ रहा है | अमेरिका का प्रवृति ज्यादा अपराधिक होना ही इसका आधार है |

इंग्लैण्ड का प्रवृति तुलनात्मक विधि से कम अपराधिक होना हुआ | इसमें यही शोध का मुद्दा है, दोनों देशों का प्रवृति मूलतः शुभ चाहते हैं | शुभ सामुदायिक नहीं है | इसे मानव पर्यंत विकसित होना आवश्यक है | इसके लिये योग्य मानव सम्मत दर्शन,विचार, शास्त्र, विकल्प प्रस्तुत किया है | विकल्प विधि से दर्शन, विचार, शास्त्र प्रस्तुत किया है | दर्शन विधि से ज्ञान, विचार विधि से सोच विचार, शास्त्र विधि से कार्यक्रम का बोध होता है: जिसके फल स्वरूप अपराध और भ्रम-मुक्त विधि से न्याय, समाधान, सत्य का प्रमाण हो जाता है | सत्य सह-अस्तित्व के रूप में होना पाया जाता है | समाधान, सर्वतोमुखी समाधान होता हुआ देखा गया है | इस ढंग से तीनों प्रमाण ही मानव परम्परा है | मानव परम्परा ही अखण्डता,सार्वभौमता के रूप में होना देखा गया है | इस विधि से मानव अपराध और भ्रम से मुक्त होने का रास्ता दिखाई पड़ती है | इसमें मानव जात प्राकृतिक विधि से ज्ञानावस्था का होना ही रहा | इसी आधार पर विकल्प प्रस्तुत है | इस क्रम में मानव अपने स्वत्व को पहचान सकता है | अभी मानव परस्वत्वता वश अपराध करता है |

इसको लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद के रूप में गिनाया गया है | तीन प्रकार से उन्मादी होना स्वाभाविक है | इन तीनों उन्माद को वैध माना गया है | धरती पर १०० से अधिक संविधान हुआ, समुदाय हुआ, शासन हुआ, सुप्रीम कोर्ट हुआ | न्याय का पता नहीं रहा, ये क्या खिलवाड़ है? मानव खिलवाड़ में क्या पायेगा? खिलवाड़ ही अन्ततोगत्वा पागलपन कहा गया है, भ्रम कहा गया है, अपराध कहा गया है | तीन भाषा प्रयोग किया | इसका औचित्यता को हर व्यक्ति सोच सकता है | क्रमिक विधि से अपना सकता है | सत्यता को समझना, अपनाना एक स्वाभाविक क्रिया है | इसमें हर समझदार कहलाने वाला भी शामिल है, मूर्ख तो शामिल है ही | समझदार ही ज्ञानी, विज्ञानी के रूप में कहलाता है | सर्वमानव का उद्धार विधि अभी तक आया नहीं | इन सब बातों को ध्यान में रखते हुये यह देखा गया, मानव पढ़ने मात्र से विद्वान नहीं होता है | समझने पर, समझ का प्रमाण होने पर, जीने से विद्वान होता है यह कहा है | इस पर विचार कर सकते हैं, अपना सकते हैं |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)